जॉन लैनन

लेखन: हैरिएट कास्टो

चित्र: रिचर्ड मॉर्गन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

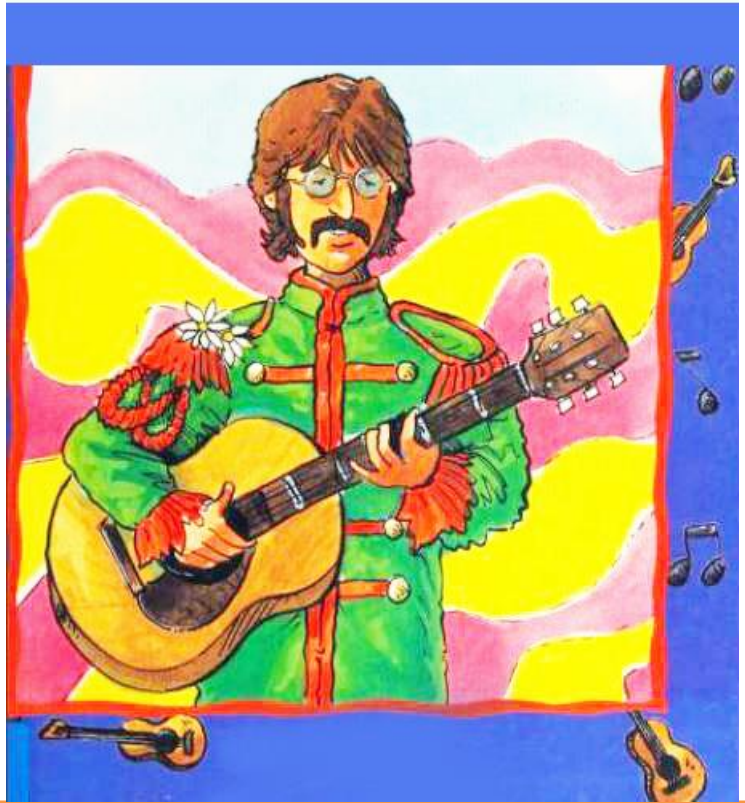

जॉन लैनन

लेखन: हैरिएट कास्टो

चित्र: रिचर्ड मॉर्गन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जॉन लैनन

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1940 में, इंग्लैण्ड के लिवरपूल शहर में, बमबारी के बीच एक बच्चे का जन्म हुआ। उसका नाम था जॉन विंस्टन लैनन। विंस्टन नाम इंग्लैण्ड के तत्कालीन प्रधान मंत्री विंस्टन चर्चिल के नाम पर रखा गया था।

जॉन के पिता समुद्री यात्रा पर थे। जॉन की माँ जूलिया को अपने पति फ्रैड का साथ बिरले ही मिलता था। जल्द ही जूलिया और फ्रैड अलग हो गए। जब जूलिया की मुलाक़ात एक और पुरुष से हुई, उसने तय किया कि बेहतर यह होगा कि जॉन उनकी बहन मीमी के साथ रहने लगे।

आंट (मौसी) मीमी जॉन को खूब प्यार करती थीं, पर वे सख़्ती भी बरतती थीं।

स्कूल में अक्सर जॉन परेशानी में फंसता था। वह ख़ुराफ़ाती दोस्तों की टोली का नेता था और हमेशा लड़ने-झगड़ने या हंसी-ठट्ठा में मशगूल रहता था।

दिमाग़ उसका तेज़ था, पर पढ़ाई में उसकी क़तई रुचि न थी। कला इकलौता विषय था जो उसे पसन्द था।

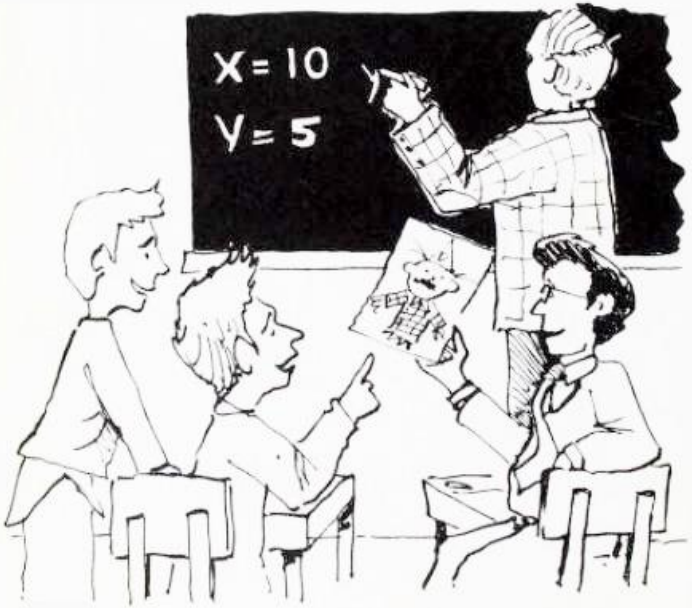

जॉन अपनी सभी स्कूली परीक्षाओं में फेल होता था। पर आख़िर उसने कुछ ऐसा तलाश लिया जिसमें उसकी रुचि थी। यह संगीत की नई शैली थी जो 'रॉक एण्ड रोल' कहलाती थी।

इस शैली के एक गायक एल्विस प्रेसली ने सैंकड़ों किशोरों को अपने खुद के बैण्ड (गायकों व वादकों का समूह) बनाने की प्रेरणा दी। जॉन ने भी तय किया कि वह भी अपना बैण्ड बनाएगा।

जॉन ने अपने बैण्ड का नाम क्वॉरीमैन रखा। इसलिए क्योंकि उसके स्कूल का नाम क्वॉरी बैंक हाई था। जॉन ने कभी औपचारिक रूप से संगीत नहीं सीखा था। पर उसकी माँ जूलिया ने उसे एक सस्ता-सा गिटार ख़रीद दिया था, और उसे कुछ स्वर सिखाए थे।

क्वॉरीमैन बैण्ड, पार्टियों और चर्च के उत्सवों में गाता-बजाता था। एक दिन उनका एक मित्र किसी दूसरे स्कूल के एक लड़के को अपने साथ एक कार्यक्रम में लाया।

उस लड़के का नाम पॉल मैकार्टनी था, और वह गिटार बजा सकता था।

जॉन ने पॉल से अपने बैण्ड में शामिल होने को कहा। दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई। मीमी मौसी बैण्ड को ख़ासा नापसन्द करती थीं। सो वे पॉल के घर जा अपना अभ्यास करते थे।

जल्द ही पॉल का दोस्त जॉर्ज हैरिसन भी बैण्ड में शामिल हो गया।

जब जॉन सतरह वर्ष का था, एक सड़क दुर्घटना में उसकी माँ की मृत्यु हो गई। जॉन को बेहद दुख हुआ।

अब जॉन कॉलेज में था। पर वह अपना पूरा समय पॉल के साथ मिल गीत लिखने और बैण्ड के साथ संगीत बजाने में लगाता था। स्टूअर्ट सटक्लिफ नाम का एक कला छात्र भी उनके समूह में शामिल हो गया। स्टूअर्ट के पास बेस गिटार था, जिसे वह बजाना सीख रहा था।

यह वह वक्त था जब जॉन का बैण्ड जब भी संगीत कार्यक्रम करता अपना नाम बदल देता था! तब जॉन को एक ख़याल आया...

उन दिनों एक जाना-माना बैण्ड था, जिसका नाम था क्रिकेटस् (झिंगुर)। इस नाम ने जॉन को बीटल्स् (गुबरैले) की याद दिलाई। उसने बीटल शब्द के हिज्जे को बदला ताकि वह 'बीट म्यूज़िक' जैसा बन जाए। क्योंकि यही उनके दल के संगीत को लोग कहते थे।

कुछ ही समय में बीटल्स् लिवरपूल के क्लबों में गाने-बजाने लगे। उनमें से एक क्लब के मालिक के जर्मनी के शहर हॅमबर्ग के क्लबों से ताल्लुकात थे। सो बीटल्स् वहाँ भी गए। पर उनके पास कोई ड्रमर (ढोलची) नहीं था। सो उन्होंने अपने एक दोस्त पीट बैस्ट को बैण्ड से जुड़ने को कहा।

हैमबर्ग जाने के लिए जॉन को आर्ट कॉलेज छोड़ना पड़ा।

मीमी को लगा कि ऐसा करना बड़ी-भारी भूल है।

हैमबर्ग में जिस क्लब में बीटल्स् अपना संगीत पेश करते थे काफी घटिया-सा था। वहाँ हाथा-पाई, बहसबाज़ी आम बात थी। रात को वे एक सिनेमा घर में सोया करते थे और हर रात उन्हें आठ घंटों तक संगीत बजाना पड़ता था।

पर बीटल्स् को इस सब में मज़ा आ रहा था। उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से गाना और बजाना सीखा ताकि शोरगुल के बावजूद लोग उन्हें सुन सकें। भीड़ को बाँधे रखने के लिए वे मंच पर कूदा-फांदी भी करने लगे।

जब वे लिवरपूल वापस लौटे तो वे एक बेहतर बैण्ड बन चुके थे और दूसरों से बिलकुल अलग भी थे।

इधर रॉक एण्ड रोल संगीत भी लोकप्रिय हो चला था। टीवी पर भी उसे दिखाया जाने लगा था।

जल्द ही बीटल्स् के लिवरपूल में ढेरों प्रशंसक बन गए। बीटल्स् काफ़ी कार्यक्रम करते थे, ज़ाहिर था कि यह कर पाने के लिए उन्हें खूब मेहनत करनी पड़ती थी। पर उन्हें इसमें भी आनन्द आता था। कुछ समय बाद वे फिर से हैमबर्ग गए। स्टूअर्ट ने वहीं बसना तय किया और एक जर्मन महिला मित्र से शादी कर ली।

ब्रायन एपस्टीन नाम के एक व्यक्ति की लिवरपूल में रिकॉर्ड की दुकान थी। लोग उससे बीटल्स् के रिकॉर्डों की मांग करने लगे। ब्रायन ने तो बीटल्स् का नाम तक नहीं सुना था। सो वह कैवर्न क्लब में उनको सुनने गया।

ब्रायन ने उन्हें सुनने के बाद तय किया कि वह बीटल्स् का मैनेजर बनेगा। हालांकि वह बैण्ड के प्रबंधन के बारे में कुछ नहीं जानता था।

बीटल्स् को ब्रायन देखने में भला लगा, सो उन्होंने हाँ कह दिया।

ब्रायन ने बैण्ड को व्यवस्थित करना शुरू किया। उसने सभी को समय सूचियाँ बना कर दीं। उन्हें मंच पर सिगरेट पीने या खाने से मना किया। यह भी कहा कि उन्हें प्रदर्शन करते वक़्त बेहतर पोशाकें पहननी होंगी।

हालांकि बीटल्स् हैमबर्ग और लिवरपूल में मशहूर हो चुके थे, अन्य लोगों ने उनके बारे में सुना ही नहीं था।

सो ब्रायन ने नई-नई जगहों पर उनके कार्यक्रम करवाने की कोशिश की, पर सफल न हो सका।

ब्रायन को लगा कि सफल होने की कुंजी है रिकॉर्ड बनाना, सो ब्रायन ने लंदन की रिकॉर्ड कंपनियों में उनके ऑडिशन करवाए।

पहले तो कम्पनियों ने साफ़ इन्कार कर दिया। आख़िरकार 1962 में रिकॉर्ड बनाने वाला एक व्यक्ति, जॉर्ज मार्टिन राज़ी हुआ।

जॉन, पॉल और जॉर्ज ने ब्रायन से कहा कि वह उनके ड्रम वादक पीट बैस्ट को बैण्ड से निकाल दे। वे उसकी जगह रिंगो स्टार को जोड़ना चाहते थे। पीट के लिवरपूल में ढ़ेरों प्रशंसक थे, वे इस फ़ैसले से नाराज़ हो गए।

उसी वर्ष गर्मियों में जॉन की गर्लफ्रैण्ड को पता चला कि वह गर्भवती है। जॉन ने उससे शादी तो कर ली, पर यह बात बीटल्स् के प्रशंसकों से गुप्त रखी गई ताकि उन्हें जलन न हो।

जॉन और सिंथिया का एक बेटा हुआ। उन्होंने उसका नाम जॉन की माँ जूलिया की याद में, जूलियन रखा।

इस बीच बीटल्स का पहला सिंगल रिकॉर्ड (जिसमें एक ही गीत हो) 'लव मी डू' बाज़ार में आया। उसने लोकप्रिय गीतों की सूची में सतरहवां स्थान पाया।

उनका दूसरा सिंगल ‘प्लीज़ प्लीज़ मी’ पहला गीत था जिसने अव्वल स्थान पाया। इसके बाद तो उनके कई गीत लोकप्रियता की सूची में अव्वल रहे।

1963 के अंत तक बीटल्स् इतनी शोहरत पा चुके थे कि लोग ‘बीटलमेनिया’ (बीटल्स् का पागलपन) की बात करने लगे। वे जहाँ भी जाते उनके पगलाए प्रशंसक चीखते-चिल्लाते उनका पीछा करते।

जल्द ही दुनिया भर में उनका नाम हो गया और वे खूब अमीर भी हो गए।

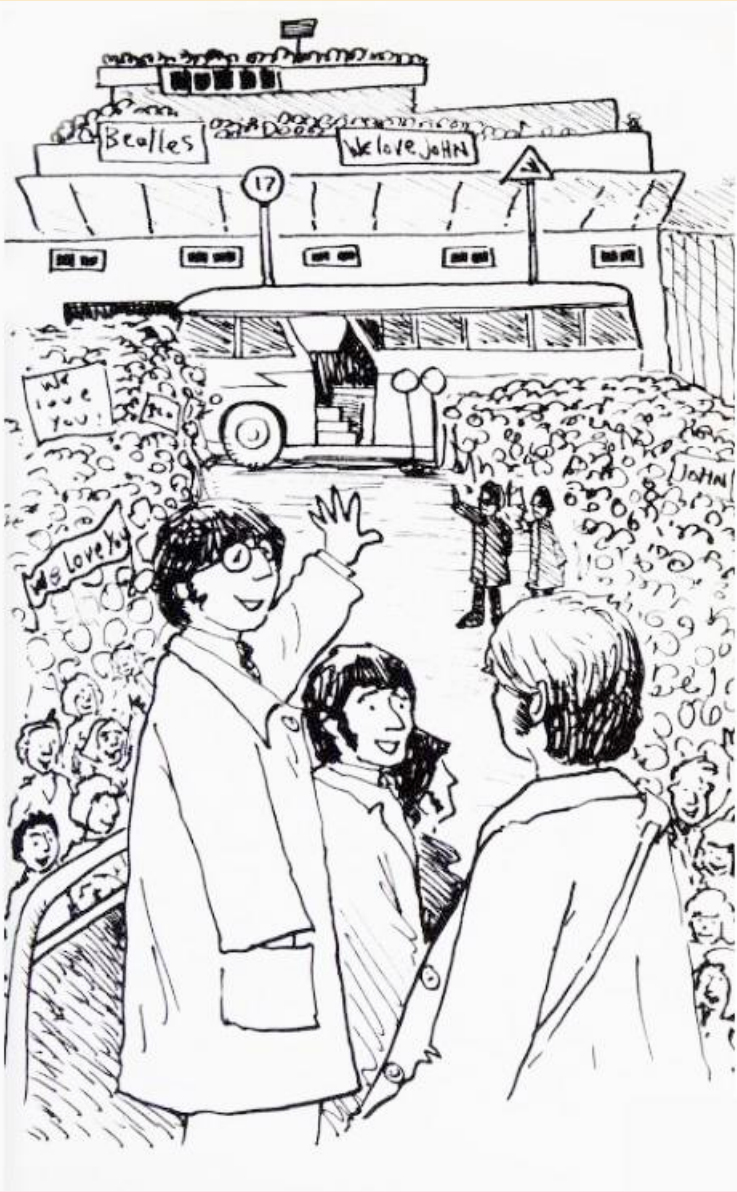

इस कदर शोहरत पाने की अपनी समस्याएं थीं। जॉन, पॉल, जॉर्ज और रिंगो हमारी-आपकी तरह जी नहीं सकते थे। वे सड़क पर पैदल नहीं चल सकते थे, ना किसी कैफे में बैठ चाय-कॉफी पी सकते थे। कई बार प्रशंसकों से बचने के लिए उन्हें भेस बदलना पड़ता था।

हालांकि सफल इन्सान होना जॉर्ज को रास आता था, पर उससे कभी-कभार ग़लतियाँ भी हो जाती थीं। तब वह सोचता कि काश वह हमेशा मशहूर न बना रहे।

अब तक बीटल्स् पूरे समय अपने संगीत कार्यक्रमों के लिए लगातार दौरे किया करते थे। पर 1966 में उन्होंने तय किया कि वे सफ़र करना बन्द कर देंगे। दरअसल उनके प्रशंसक कार्यक्रमों के दौरान इस कदर चीखते थे कि उन्हें खुद अपना गाया-बजाया सुनाई तक नहीं देता था। उन्हें लगने लगा कि वे संगीतकारों के रूप में समय के साथ बेहतर होने के बदले बदतर होते जा रहे हैं।

साथ ही वे सभी बीटल्स् समूह का हिस्सा होने के अलावा भी बहुत कुछ करना चाहते थे। जॉर्ज ने एक फिल्म में अभिनय किया। बाद में वे सब भारत गए ताकि पूर्व के धर्मों के बारे में जान-सीख सकें।

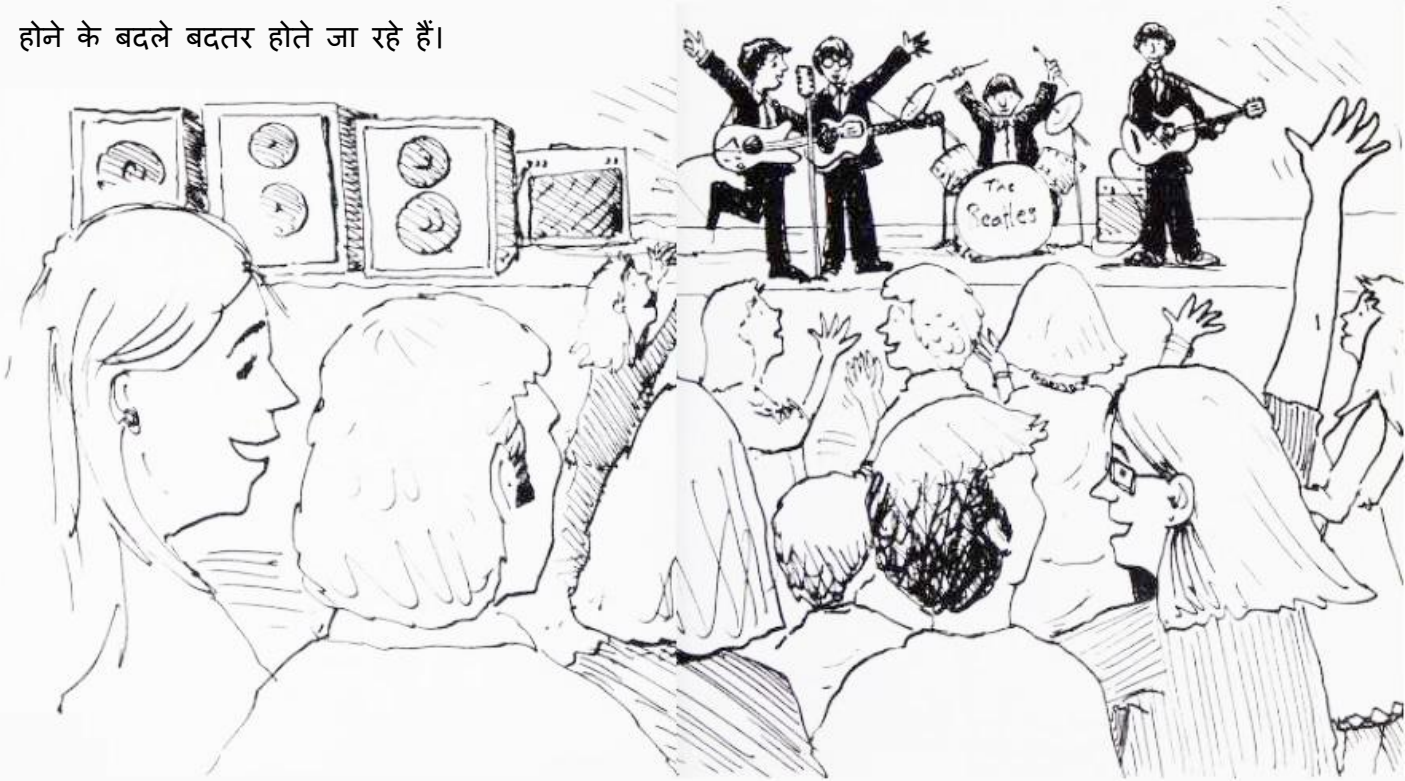

1967 में उनके मैनेजर, ब्रायन ने काफ़ी सारी नींद की गोलियाँ खा लीं, जिससे उसकी मौत हो गई। बीटल्स् को भारी सदमा पहुँचा। उन्होंने अपना सबसे क़रीबी दोस्त जो खो दिया था। वे फिक्रमन्द भी हुए, ब्रायन ही उनका हिसाब-किताब संभालता था। उसके न होने पर किसीको सूझ ही नहीं रहा था कि क्या और कैसे करना है।

बीटल्स ने दूसरे संगीतकारों, कलाकारों और लेखकों की मदद करने के लिए 'एपल' नाम से एक कम्पनी बनाई। पर वह ठीक से चल नहीं सकी।

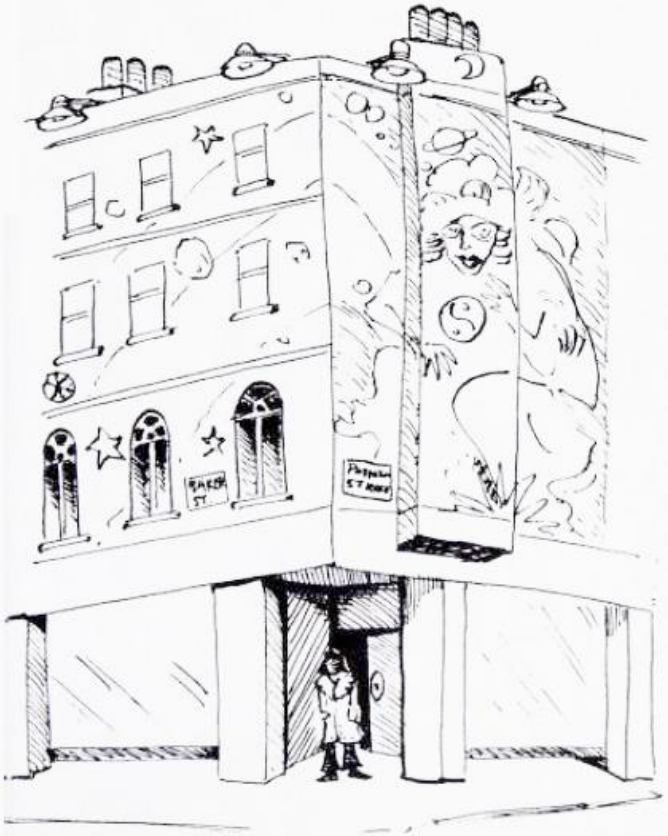

बीटल्स् के रिकॉर्ड अब भी खासे लोकप्रिय थे। हमेशा की तरह जॉन और पॉल ही ज़्यादातर गीत लिखते थे। पर उनका संगीत लगातार बदलता, विकसित होता रहता था।

जॉर्ज भारतीय संगीत से प्रभावित हुए और उसने सितार बजाना सीखा।

बीटल्स् के सभी सदस्य अपने-अपने विचार साझा करते और अक्सर रिकॉर्डिंग स्टूडियो में घंटों काम करते। जब तक उन्हें यह न लगने लगता कि गीत की धुन बिलकुल सही है।

जॉन के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण लोग बाकी बीटल्स् थे। उतने ही महत्वपूर्ण जितने सिंथिया और जूलियन थे। पर यह स्थिति तब अचानक बदल गई जब जॉन की मुलाक़ात एक जापानी कलाकार योको ओनो से हुई। जॉन को उससे प्यार हो गया।

जॉन और सिंथिया का तलाक़ हुआ। अब जॉन और योको हर जगह साथ-साथ जाने लगे। रिकॉर्डिंग स्टूडियो तक में योको, जॉन के पास बैठती थी।

इस बीच बीटल्स् आपस में उलझने-झगड़ने भी लगे थे। सो उन्होंने तय किया कि उन्हें जुदा हो जाना चाहिए। पर समूह टूटने के पहले उन्होंने अपना आख़िरी एल्बम 'एबी रोड' बनाया। इस पर काम करते हुए उन्हें खूब मज़ा भी आया।

जॉन ने इसके बाद खुद के कई रिकॉर्ड बनाए। योको के साथ वे शांति अभियान में जुड़े। 1975 में उनके बेटे शॉन का जन्म हुआ। जॉन ने अपने बेटे के साथ समय बिताने के लिए कई सालों तक रिकॉर्डिंग बन्द कर दी।

1980 में जॉन ने फिर से रिकॉर्डिंग शुरू की। वे अब योको और शॉन के साथ न्यू यॉर्क में रहने लगे थे। एक रात जब जॉन रिकॉर्डिंग स्टूडियो से घर लौट रहे थे, उनके एक प्रशंसक ने सड़क पर ही गोली मार कर उनकी हत्या कर दी।

यह ख़बर सुन बाकी बीटल्स् सन्न रह गए। आपसी मतभेदों के बावजूद वे एक-दूसरे से प्यार करते थे। दुनिया भर में बसे जॉन के प्रशंसकों को भी भारी सदमा पहुँचा।

कुछ और तथ्य

पॉल, जॉर्ज और रिंगो

जॉन की ही तरह, बीटल्स् से अलग होने के बाद पॉल, जॉर्ज और रिंगो ने भी अपने-अपने रिकॉर्ड जारी किए। पॉल ने विंग्स् नाम से एक समूह बनाया और उसके अलावा कई रिकॉर्ड खुद भी बनाए। जॉर्ज एक सफल फिल्म निर्माता बने। रिंगो ने कई फिल्मों में काम किया और एक टी.वी. ऋंखला 'थॉमस द टैंक ईंजन' में अपनी आवाज़ दी (वॉयस ओवर)।

लैनन और मैकार्टनी

बीटल्स् और उनका संगीत आज भी लोकप्रिय है। उनके रिकॉर्ड दुनिया भर में बड़ी संख्या में बिकते हैं। जॉन लैनन और पॉल मैकार्टनी की जोड़ी सबसे मशहूर और सफल गीतकारों की साझेदारी रही है।

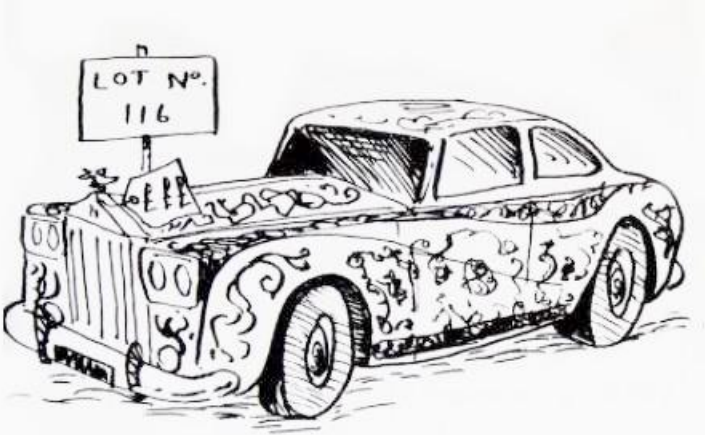

यादगार

कई लोग बीटल्स् की यादगारों को इकट्ठा करते हैं, यानी समूह से जुड़ी हर किस्म की चीज़ों को ख़रीदते और सहेजते हैं। जब भी किसी नीलामी घर में उनके काम में लिए वाद्य, उनके फोटो, हाथ से लिखे नोटस् या उनके दस्तख़त बिकने के लिए आते हैं, लोग भारी कीमत अदा कर उन्हें ख़रीदते हैं। लिवरपूल के जिस घर में पॉल पले-बढ़े थे, वह आजकल एक राष्ट्रीय न्यास की देखरेख में है, ताकि जनता उसे देखने जा सके।

जॉन लैनन के जीवन की महत्वपूर्ण तिथियाँ

1940 - जॉन विंस्टन लैनन का जन्म। वे जूलिया तथा फ्रैड के बेटे थे।

1956 - जॉन ने अपने स्कूली दोस्तों के साथ 'क्वॉरीमैन' नामक बैण्ड बनाया।

1957 - जॉन आर्ट कौलेज के छात्र बने।

1958 - सड़क दुर्घटना में जॉन की माँ की मृत्यु हो गई।

1959 - बैण्ड का नाम बदल कर 'बीटल्स्' रखा।

1960 - बीटल्स् हैमबर्ग के पहले दौरे पर गए।

1961 - ब्रायन एपस्टीन, बीटल्स् के मैनेजर बने।

1962 - जॉन ने सिंथिया पावल से विवाह किया।

1962 - बीटल्स् का पहला रिकॉर्ड 'लव मी टू' ब्रिटेन में जारी हुआ।

1963 - जॉन व सिंथिया के बेटे जूलियन का जन्म हुआ।

1967 - ब्रायन एपस्टीन की मौत हुई।

1969 - जॉन ने जिब्राल्टर में योको ओनो से विवाह किया।

1975 - जॉन ओर योको के बेटे शॉन का जन्म हुआ।

1980 - न्यू यॉर्क में जॉन की हत्या हुई।